अंक : 3, सितम्बर 2016

# LEISA INDIA

# लीज़ा इण्डिया

विशेष हिन्दी संस्करण

# लीज़ा इण्डिया

*विशेष हिन्दी संस्करण*
*सितम्बर 2016, अंक 3*

यह अंक लीज़ा इण्डिया टीम के साथ मिलकर जी०ई०ए०जी० द्वारा प्रकाशित की जा रही है, जिसमें लीज़ा इण्डिया में प्रकाशित अंग्रेजी भाषा के कुछ मूल लेखों का हिन्दी में अनुवाद एवं संकलन है।

**गोरखपुर एनवायरन्मेन्टल एक्शन ग्रुप**
224, पुर्दिलपुर, एम०जी० कालेज रोड,
पोस्ट बाक्स 60, गोरखपुर- 273001
फोन : +91-551-2230004,
फैक्स : +91-551-2230005
ईमेल : geagindia@gmail.com
वेबसाइट : www.geagindia.org

**ए.एम.ई. फाउण्डेशन**
नं० 204, 100 फीट रिंग रोड, 3rd फेज, 2nd ब्लाक,
3rd स्टेज, बनशंकरी, बैंग्लोर- 560085, भारत
फोन : +91-080-26699512,
+91-080-26699522
फैक्स :+91-080-26699410,
ईमेल : leisaindia@yahoo.co.in

**लीज़ा इण्डिया**
लीज़ा इण्डिया अंग्रेजी में प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका है, जो इलिया की सहभागिता से ए.एम.ई. फाउण्डेशन बैंग्लोर द्वारा प्रकाशित होती है।

**मुख्य सम्पादक**
के.वी.एस. प्रसाद, ए.एम.ई. फाउण्डेशन

**प्रबन्ध सम्पादक**
टी.एम.राधा., ए.एम.ई. फाउण्डेशन

**अनुवाद समन्वय**
अर्चना श्रीवास्तव, जी.ई.ए.जी.
पूर्णिमा, ए.एम.ई. फाउण्डेशन

**प्रबन्धन**
रूक्मिणी जी.जी., ए.एम.ई. फाउण्डेशन

**लेआउट एवं टाईपसेटिंग**
राजकान्ती गुप्ता, जी.ई.ए.जी.

**छपाई**
कस्तूरी ऑफसेट, गोरखपुर

**आवरण फोटो**
जी.ई.ए.जी.

**लीज़ा पत्रिका के अन्य सम्पादन**
लैटिन, अमेरिकन, पश्चिमी अफ्रीकन एवं ब्राज़ीलियन संस्करण

**लीज़ा इण्डिया पत्रिका के अन्य क्षेत्रीय सम्पादन**
तमिल, कन्नड़, उड़िया, तेलगू, मराठी एवं पंजाबी



सम्पादक की ओर से लेखों में प्रकाशित जानकारी के प्रति पूरी सावधानी बरती गई है। फिर भी दी गई जानकारी से सम्बन्धित किसी भी त्रुटि की जिम्मेदारी उस लेख के लेखक की होगी।



माइजेरियर के सहयोग एवं जी०ई०ए०जी० के समन्वयन में ए०एम०ई० द्वारा प्रकाशित


## लीज़ा

कम बाहरी लागत एवं स्थायी कृषि पर आधारित लीज़ा उन सभी किसानों के लिए एक तकनीक और सामाजिक विकल्प है, जो पर्यावरण सम्मत विधि से अपनी उपज व आय बढ़ाना चाहते हैं क्योंकि लीज़ा के अन्तर्गत मुख्यतः स्थानीय संसाधनों और प्राकृतिक तरीकों को अपनाया जाता है और आवश्यकतानुसार ही बाह्य संसाधनों का सुरक्षित उपयोग किया जाता है।

लीज़ा पारम्परिक और वैज्ञानिक ज्ञान का संयोग है, जो विकास के लिए आवश्यक वातावरण तैयार करता है। यह भी मुख्य है कि इसके द्वारा किसानों की क्षमता को विभिन्न तकनीकों से मजबूत किया जाता है और खेती को बदलती जरूरतों और स्थितियों के अनुकूल बनाया जाता है, साथ ही उन महिला एवं पुरुष किसानों व समुदायों का सशक्तिकरण होता है, जो अपने ज्ञान, तरीकों, मूल्यों, संस्कृति और संस्थानों के आधार पर अपना भविष्य बनाना चाहते हैं।

**ए.एम.ई. फाउण्डेशन,** डक्कन के अर्द्धशुष्क क्षेत्र के लघु सीमान्त किसानों के बीच विकास एजेन्सियों के जुड़ाव, अनुभव के प्रसार, ज्ञानवर्द्धन एवं विभिन्न कृषि विकल्पों की उत्पत्ति द्वारा पर्यावरणीय कृषि को प्रोत्साहित करता है। यह कम लागत प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन के लिए पारम्परिक ज्ञान व नवीन तकनीकों के सम्मिश्रण से आजीविका स्थाईत्व को बढ़ावा देता है।

ए.एम.ई. फाउण्डेशन गांव में इच्छुक किसानों के समूह को वैकल्पिक कृषि पद्धति तैयार करने व अपनाने में सक्षम बनाने हेतु उनके साथ जुड़कर सघन रूप से काम कर रही है। यह स्थान अभ्यासकर्ताओं व प्रोत्साहकों के लिए उनको देखने–समझने की क्षमता में वृद्धि करने हेतु सीखने की परिस्थिति के तौर पर है। इससे जुड़ी स्वयं सेवी संस्थाओं और उनके नेटवर्क को जानने के लिए इसकी वेबसाईट देखें–www.amefound.org

**गोरखपुर एनवायरन्मेन्टल एक्शन ग्रुप** एक स्वैच्छिक संगठन है, जो स्थाई विकास और पर्यावरण से जुड़े मुद्दों पर सन् 1975 से काम कर रहा है। संस्था लघु एवं सीमान्त किसानों, आजीविका से जुड़े सवालों, पर्यावरणीय संतुलन, लैंगिक समानता तथा सहभागी प्रयास के सिद्वान्तों पर सफलतापूर्वक कार्य कर रही है। संस्था ने अपने 30 साल के लम्बे सफर के दौरान अनेक मूल्यांकनों, अध्ययनों तथा महत्वपूर्ण शोधों को संचालित किया है। इसके अलावा अनेक संस्थाओं, महिला किसानों तथा सरकारी विभागों का आजीविका और स्थाई विकास से सम्बन्धित मुद्दों पर क्षमतावर्धन भी किया है। आज जी0ई0ए0जी0 ने स्थाई कृषि, सहभागी प्रयास तथा जेण्डर जैसे विषयों पर पूरे उत्तर भारत में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है।

**माइजेरियर** वर्ष 1958 में स्थापित जर्मन कैथोलिक बिशप की संस्था है, जिसका गठन विकासात्मक सहयोग के लिए हुआ था। पिछले 50 वर्षों से माइजेरियर अफ्रीका, एशिया और लातिन अमेरिका में गरीबी के विरूद्ध लड़ने के लिए प्रतिबद्ध है। जाति, धर्म व लिंग भेद से परे किसी भी मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए यह हमेशा तत्पर है। माइजेरियर गरीबी और हानियों के विरूद्ध पहल करने के लिए प्रेरित करने में विश्वास रखता है। यह अपने स्थानीय सहयोगियों, चर्च आधारित संगठनों, गैर सरकारी संगठनों, सामाजिक आन्दोलनों और शोध संस्थानों के साथ काम करने को प्राथमिकता देता है। लाभार्थियों और सहयोगी संस्थाओं को एक साथ लेकर यह स्थानीय विकासात्मक क्रियाओं को साकार करने और परियोजनाओं को क्रियान्वित करने में सहयोग करता है। यह जानने के लिए कि स्थिर चुनौतियों की प्रतिक्रिया में माइजेरियर किस प्रकार अपनी सहयोगी संस्थाओं के साथ काम कर रहा है। इसकी वेबसाइट देखें (www.misereor.de; www.misereor.org)

## मिट्टी की सेहत : उपज बढ़ाने की कुंजी

पुरुषोत्तम जांगड़, मोनू के राठौर रनवीर, एस शक्तावत एवं वी खटाना

राजस्थान के किसानों ने मृदा स्वास्थ्य को उन्नत बनाते हुए उपज एवं आमदनी के मुद्दे पर काम किया है। मृदा में जैविक कार्बन सामग्रियों को बढ़ाकर, विशेषकर ये महिला किसान उच्च उपज के साथ पोषण वाटिका उगाने में सक्षम हो रही हैं। परिणामस्वरूप उनके परिवार को बेहतर पोषण मिलने के साथ–साथ अच्छी आमदनी भी हो रही है।

## नेपाल में स्थाई क्षेत्रीय खाद्य चक्र

तुलसी गिरी

सुदूर विदेशों से अनाजों का आयात करना तथा मशीनों एवं रसायनों के अत्यधिक उपयोग से उपज प्राप्त करना कृषि की वर्तमान समस्याओं का समाधान नहीं है। अगर हम कृषि खाद्य प्रणाली का कोई नया तरीका नहीं खोज सकते तो हम अपने पुराने अभ्यासों के ऊपर पुनः विचार कर उनमें सुधार कर सकते हैं और क्षेत्रीय खाद्य चक्र ऐसी ही एक प्रणाली है, जो खेती को स्थाईत्व प्रदान करती है।

## जब मिट्टी बोली

प्रो0 एम0 महादेवप्पा

वर्ष दर वर्ष रसायनों के अत्यधिक प्रयोग से न सिर्फ मानव एवं पशु, वरन् मृदा के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव के साथ पारिस्थितिकी संतुलन भी बिगड़ रहा है। ऐसे में विभिन्न जैव उर्वरकों के बारे में व्यापक जानकारी किसानों को लाभ पहुंचाने के साथ–साथ पर्यावरण संरक्षण में भी सहायक है।

## सामूहिक प्रयासों से लाभ अर्जित करना

प्रदीप कुमार पाण्डा

अपने उपज और आमदनी में वृद्धि को देखते हुए उदयपुर की महिलाएं जैविक विधि से टमाटर की खेती करने लगी हैं। संगठन एवं सामूहिकता से लाभान्वित होती ये महिलाएं अब उत्पादन से लेकर बाजार तक की सभी गतिविधियों को संभालने में सक्षम हैं।

## स्थाई एवं अनुकूलित खेती : महिलाओं के सामूहिक प्रयास

शीलू फ्रांसिस एवं सारा कालमियस

महिला किसानों के पास हमेशा से ही खेती करने की सशक्त क्षमता है, लेकिन उन्हें हाशिये पर रखा जाता है। तमिलनाडु में महिला संगठनों ने अपने एक लाख सदस्यों के साथ मिलकर महिला किसानों द्वारा खेती में किये जाने वाले कार्यों को पहचान दिलाने, पारिस्थितिकी कृषि सम्बन्धित गतिविधियों को अपनाने तथा खेतों को नुकसानदायक रसायनों से सुरक्षित करने का सफल प्रयास किया है।

# अनुक्रमणिका

**विशेष हिन्दी संस्करण, सितम्बर 2016**


**5 मिट्टी की सेहत : उपज बढ़ाने की कुंजी**
पुरुषोत्तम जांगड़, मोनू के राठौर रनवीर, एस शक्तावत एवं वी खटाना

**7 किसान की डायरी : जैविक की तरफ जाओ**
एन.आर. चन्द्रशेखर

**8 नेपाल में स्थाई क्षेत्रीय खाद्य चक्र**
तुलसी गिरी

**12 जब मिट्टी बोली**
प्रो0 एम0 महादेवप्पा

**15 सामूहिक प्रयासों से लाभ अर्जित करना**
प्रदीप कुमार पाण्डा

**18 स्थाई एवं अनुकूलित खेती : महिलाओं के सामूहिक प्रयास**
शीलू फ्रांसिस एवं सारा कालमियस

**20 जानकारी से मिला नव पहल का रास्ता**
अर्चना श्रीवास्तव


## जानकारी से मिला नव पहल का रास्ता

अर्चना श्रीवास्तव

महिला किसानों को सशक्त बनाने के लिए यह जरूरी है कि उन्हें ज्ञान व जानकारियों से समृद्ध किया जाये। जानकारी के आधार पर ही वे अपने खेत, मृदा एवं जल साथ परिवार की समृद्धि को भी बढ़ाती हैं। उत्तर प्रदेश की महिला किसानों के साथ के अनुभव कुछ ऐसा ही दर्शाते हैं।

# यह अंक...

**सम्पादकीय.....**

आज पूरे देश में मृदा के स्वास्थ्य को लेकर चिन्ता व्यक्त की जा रही है। मृदा प्रदूषण की गंभीरता को समझते हुए मृदा जांच की पहल राष्ट्रीय स्तर से की जा रही है। सभी राज्यों के सभी जनपदों में, सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों एवं कृषि विभाग को सीजनवार मृदा जांच का लक्ष्य दिया जा रहा है, जिसे लोग येन–केन–प्रकारेण पूरा भी कर रहे हैं। हालांकि अभी मृदा जांच की गुणवत्ता पर सवाल उठाये जा सकते हैं, परन्तु संतोष की बात यह है कि एक शुरूआत हो चुकी है, तो देर–सवेर गुणवत्ता का मसला भी हल हो ही जायेगा। इस विषय पर माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा यह निर्देशित भी किया गया है कि देश के सभी किसानों का मृदा स्वास्थ्य कार्ड होना चाहिए। मृदा के स्वास्थ्य व खेत की उर्वरता पर आधारित लीज़ा सितम्बर, 2016 अंक आपकी सेवा में प्रस्तुत है।

पत्रिका का पहला लेख ''मिट्टी की सेहत : उपज बढ़ाने की कुंजी'' श्री पुरुषोत्तम जांगड़, मोनू के. राठौर, रनवीर, एस. शक्तावत एवं वी. खटाना द्वारा लिखित है। इस लेख में दिये गये उदाहरणों के माध्यम से लेखक ने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि अगर हम उपज बढ़ाना चाहते हैं तो हमें सबसे पहले मिट्टी की सेहत सुधारने की दिशा में पहल करनी होगी। जबकि दूसरे लेख ''किसान डायरी जैविक की तरफ जाओ'' में कर्नाटक के कोलार जिले के किसान श्री एन0 आर0 चन्द्रशेखर ने अपने अनुभवों से जल संकट का सामना करने की बात कही है। श्री तुलसी गिरी द्वारा लिखित ''नेपाल में स्थाई क्षेत्रीय खाद्य चक्र'' में नेपाल की स्थानीय परिस्थितियों तथा प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करते हुए जैविक खेती से होने वाले फायदों पर चर्चा की गयी है।

पत्रिका का चौथा लेख ''सामूहिक प्रयासों से लाभ अर्जित करना'' श्री प्रदीप कुमार पाण्डा द्वारा लिखा गया है। श्री पाण्डा ने अपने इस लेख में आज की कृषिगत एवं आजीविका सम्बन्धी चुनौतियों से निपटने हेतु सांगठनिक प्रयासों एवं सामूहिकता की महत्ता को प्रदर्शित किया है। जबकि सुश्री शीलू फ्रांसिस एवं सुश्री सारा कालमियस द्वारा लिखा गया लेख ''स्थाई एवं अनुकूलित खेती : महिलाओं के सामूहिक प्रयास'' है, जिसमें उन्होंने यह बताया है कि अगर हमें स्थाईत्व व बदलाव के दौर में अनुकूलन की बात करनी है, तो महिलाओं द्वारा किये जाने वाले प्रयासों को उभारना होगा।

महिला किसानों को जानकारी से समृद्ध कर नव पहल का रास्ता तलाशने व आजीविका के नवीन विकल्पों को सामने लाने की बात पर जोर देता पत्रिका का अन्तिम लेख ''जानकारी से मिला नव पहल का रास्ता'' सुश्री अर्चना श्रीवास्तव द्वारा लिखित है।

अन्त में, पत्रिका के लेखों पर आपके बहुमूल्य सुझावों की प्रतीक्षा में...

• **सम्पादक मण्डल**

# मिट्टी की सेहत

## उपज बढ़ाने की कुंजी

**पुरुषोत्तम जांगड़, मोनू के राठौर रनवीर, एस शक्तावत एवं वी खटाना**

*राजस्थान के किसानों ने मृदा स्वास्थ्य को उन्नत बनाते हुए उपज एवं आमदनी के मुद्दे पर काम किया है। मृदा में जैविक कार्बन सामग्रियों को बढ़ाकर, विशेषकर ये महिला किसान उच्च उपज के साथ पोषण वाटिका उगाने में सक्षम हो रही हैं। परिणामस्वरूप उनके परिवार को बेहतर पोषण मिलने के साथ–साथ अच्छी आमदनी भी हो रही है।*

ग्रामीण क्षेत्रों में, जहां की अर्थव्यवस्था पूरी तरह कृषि पर आधारित होती है, वहां लोगों की आमदनी एवं आजीविका सुरक्षा की चाभी मिट्टी की सेहत में छुपी होती है। बहुत से अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि गलत तरीके से भूमि का उपयोग करने तथा अनुचित मृदा प्रबन्धन अभ्यासों को अपनाने के कारण मृदा स्वास्थ्य दिनों–दिन बिगड़ता जा रहा है। किसानों द्वारा जैविक खादों का उपयोग कम कर देने के कारण मिट्टी की जल ग्रहण क्षमता घटती जा रही है, जिससे फसल उत्पादकता पर भी असर पड़ रहा है। घर पर बने खादों का उपयोग करना, फसल चक्रीकरण, मिश्रित खेती, अन्तः खेती, खेत को परती छोड़ना तथा गर्मियों में खेत की जुताई आदि अभ्यास धीरे–धीरे या तो कम होते जा रहे हैं या फिर खत्म हो गये हैं और इनके स्थान पर रसायनिक उर्वरकों का उपयोग बढ़ गया साथ ही सरकारी नीतियों के कारण एकल खेती की ओर लोगों का झुकाव बढ़ गया है।

### पहल

पीवाईएक्सईआरए ग्लोबल नामक स्वैच्छिक संगठन द्वारा क्षेत्र में कृषि एवं आय सुरक्षा हेतु तीन मुख्य क्षेत्रों पर केन्द्रित ग्राम को आगे बढ़ाने हेतु संयुक्त पहल (जेआईवीए) नाम से एक परियोजना का क्रियान्वयन किया गया। जॉन डीरे फाउण्डेशन द्वारा वित्त पोषित इस परियोजना का क्रियान्वयन सूखाग्रस्त राजस्थान के राजसमन्द जिले के रलमगला विकासखण्ड में अवस्थित सकरवास पंचायत के तीन गांवों में जनवरी 2103 से किया गया।

*ये महिला किसान वर्मी कम्पोस्ट तैयार कर अपनी पोषण वाटिका में उपयोग कर रही हैं तो दूसरी तरफ सब्ज़ियों के बेकार पत्तों से वर्मी कम्पोस्ट भी तैयार कर रही हैं।*

खाद से समृद्ध गृहवाटिका में स्वस्थ फसल

परियोजना के अन्दर सम्पादित की जाने वाली गतिविधियों के परिणामस्वरूप कृषिगत आमदनी में होने वाले स्थाई वृद्धि को देखकर किसानों को स्वस्थ मिट्टी की महत्ता समझ में आयी और उन्होंने मृदा स्वास्थ्य को उन्नत बनाने के लिए विविध प्रयासों को अपनाना प्रारम्भ कर दिया। इस सन्दर्भ में किसानों को प्रक्षेत्र आधारित व्यवहारिक प्रशिक्षण भी दिया गया। क्षेत्र की मुख्य तीन फसलों को ध्यान में रखकर दिये गये इस प्रशिक्षण के उपरान्त वर्ष 2013 से 2014 के बीच कुल 18 मॉडल किसानों का चयन किया गया और प्रत्येक प्रशिक्षण में औसतन 25 किसानों ने अपनी सहभागिता निभाई।

गर्मियों में खेत की गहरी जुताई और एकीकृत मृदा प्रबन्धन जैसी गतिविधियों के बारे में समुदाय के बीच जागरूकता अभियान चलाया गया। मृदा परीक्षण हेतु नमूने एकत्र करने के ऊपर किसानों को प्रशिक्षित किया गया तथा मृदा परीक्षण के परिणामों को समझने में भी उनकी सहायता की गयी। इसके साथ ही देशी खाद के उपयोग से होने वाले फायदों पर भी सघन जागरूकता अभियान चलाया गया।

प्रशिक्षण के उपरान्त, किसानों ने गर्मियों में खेत की जुताई, मृदा परीक्षण, खाद बनाना, वर्मी कम्पोस्ट तैयार करना, सब्जियां उगाना, फसल चक्रीकरण आदि विभिन्न तरह की गतिविधियों को पूरी रूचि के साथ करना प्रारम्भ कर दिया। पुरूष किसानों के साथ–साथ महिला किसान भी परीक्षण हेतु मृदा सैम्पल इकट्ठा करने की प्रक्रिया पूरी तरह समझ चुकी थीं और उन्होंने वर्श 2013 में 132 सैम्पल तथा वर्ष 2014 में 208 नमूना परीक्षण के लिए एकत्र किया। मिट्टी की जांच के उपरान्त प्राप्त परिणामों से प्रदर्शित हुआ कि उनकी मिट्टी में पोटाश पर्याप्त मात्रा में है, परन्तु फासफोरस की बहुत कमी है। अधिकांश मृदा नमूनों में जैविक कार्बन की बहुत कमी पाई गयी। मई 2013 में लिये गये मृदा नमूनों में जैविक कार्बन की मात्रा एक प्रतिशत से भी कम अर्थात् औसतन 0.354 प्रतिशत ही पाई गयी।

किसानों को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया गया कि वे गाय के गोबर और कृषि अपशिष्टों से खाद / वर्मी कम्पोस्ट बनाये। सभी डेमो किसानों को नाडेप व वर्मी कम्पोस्ट पिट बनाने के लिए संस्था की तरफ से अनुदान दिया गया जबकि अन्य 34 किसानों ने अपने स्वयं के खर्च से वर्मी कम्पोस्ट पिट तैयार किया।

वर्तमान में, तीनों गांवों में कुल मिलाकर 52 किसान 100 किग्रा से लेकर 4550 किग्रा तक वर्मी कम्पोस्ट का उत्पादन कर रहे हैं और अन्य बहुत से किसान इसे बनाने के लिए अग्रसर हो रहे हैं। कुछ किसान बड़े पैमाने पर वर्मी कम्पोस्ट तैयार करने से पहले अनुभव करने के लिए कम मात्रा में वर्मी कम्पोस्ट तैयार कर रहे हैं। यद्यपि वर्मी कम्पोस्ट तैयार करने में महिलाओं की अग्रणी भूमिका है, फिर भी कुछ महिला किसानों को अभी भी केंचुओं को हाथ से छूने में घिन आती थी और यही बात रूचि होने के बाद भी उन्हें बड़े पैमाने पर वर्मी कम्पोस्ट तैयार करने से रोक रही थी। इस बात को समझते हुए जेआईवीए ने किसानों को एक साधारण सा उपकरण प्रदान किया, जिसका प्रयोग करने से केंचुओं को कोई नुकसान भी नहीं पहुंचता और महिला किसानों को केंचुओं को छूने में कोई दिक्कत भी नहीं होती। तुलनात्मक रूप से यह साफ–सुथरा अभ्यास भी है।

महिला किसानों को पोषण युक्त गृहवाटिका तैयार करने के ऊपर भी प्रशिक्षित किया गया और अब वे अपने परिवार के लिए सब्ज़ियां स्वयं उगा ले रही हैं। अधिक होने पर सब्जियां बेच भी लेती हैं। आज लगभग 25 महिलाओं ने अपनी पोषण वाटिका तैयार कर ली है और उसमें विविध तरह की सब्ज़ियां जैसे बन्द गोभी, फूलगोभी, पालक, टमाटर, मिर्चा, बैगन आदि उगा रही हैं। कुछ महिलाएं तो गाजर, मूली, धनिया की पत्ती भी उगा रही हैं। ये महिला किसान वर्मी कम्पोस्ट तैयार कर अपनी पोषण वाटिका में उपयोग कर रही हैं तो दूसरी तरफ सब्ज़ियों के बेकार पत्तों से वर्मी कम्पोस्ट को भी तैयार कर रही हैं।

शेष पृष्ठ 11 पर.....

खेत में वर्मीकम्पोस्ट का उपयोग करती महिला किसान

## किसान की डायरी :

# जैविक की तरफ जाओ

**एन०आर० चन्द्रशेखर**

अपनी सूखाग्रस्त परिस्थितियों के लिए प्रसिद्ध कोलार जिले के नेनामन्नाबल्ली गांव में श्री एन0आर0 चन्द्रशेखर नामक किसान हरित क्रान्ति ला रहे हैं। कर्नाटक व आन्ध्र प्रदेश की सीमा पर बसे इस जिले की प्रसिद्धि का मुख्य कारण यहां पर अवस्थित हजारों झीलें हैं। लेकिन वर्तमान में, झील और बोरवेल सूखे पड़े हैं और भूमिगत जल 1200 फीट से भी नीचे चला गया है। इस जिले को जीवन प्रदान करने वाली कोई भी नदी नहीं बची है और इसलिए यहां पर जल के बिना कोई भी फसल उगा पाना असंभव है। इन्हीं कठोर परिस्थितियों में, प्राकृतिक रूप से उपलब्ध पानी के उपयोग एवं जैविक खेती पद्धति को अपना कर श्री चन्द्रशेखर ने लोगों को स्थाई खेती करने का एक रास्ता दिखा दिया है।

अपने 30 गुण्टा (लगभग 0.75 एकड़) खेत में चन्द्रशेखर ने 500 पौधे पपीता के, 300 आम के, 1500 शहतूत, 1500 अरहर के पौधे तथा अन्य बहुत सी अन्तः फसलों जैसे सेम, सोयाबीन आदि को लगा रखा है। कोलार जिले में जहाँ पानी सोने की तरह महंगा है, वहाँ उन्होंने 3x3x3 फीट के 45–50 सोख्ता गढ्ढा बना रखा है। इसी प्रकार, उन्होंने गढ्ढा प्रणाली का उपयोग कर 2x2 फीट का मॉडल तैयार कर रागी के पौधों को लगाया है। इन गढ्ढों में पानी एकत्रित होता रहता है। नमी एवं उर्वरता बनाये रखने के लिए उन्होंने प्रत्येक 4 गढ्ढों के बाद हब्बल बीन्स के पौधों को लगा रखा है। रागी की कटाई के बाद हब्बल बीन्स उत्पादित होगा। अपने 30 गुण्टा भूमि में उन्होंने 70x50x12 फीट का तालाब भी खुदा रखा है, जिसमें आपातकालीन समय में पौधों की सिंचाई के लिए पानी एकत्र है।

भूमि को प्रत्येक इंच की महत्ता को समझते हुए उन्होंने अपने खेत में चना, जूट, ढैंचा एवं अन्य बहुत सी दलहनी फसलों को लगाया ताकि मृदा की ऊपरी परत पर नमी बनी रहे और मृदा उर्वरता में वृद्धि हो। मिट्टी की जैविक गुणवत्ता बढ़ाने के लिए उन्होंने चने की पत्तियों को खेत में बिखेर दिया। यह रसायनिक उर्वरकों का प्रयोग करने वाले किसानों के लिए सबसे बढ़िया मॉडल है। उन्होंने खेत के चारों तरफ शीशम, तीसी (अलसी) एवं ग्लीरिसीडिया को भी उगाया। इन्होंने इन पौधों की पत्तियों को खेत में फैला दिया, परिणामतः मृदा उर्वरता उन्नत हुई एवं बेहतर उपज मिला।

फोटो : लेखक

चन्द्रशेखर, जैविक खेती के रोल मॉडल

सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि उन्होंने दुर्लभ जल संसाधनों का उपयोग बहुत कुशलतापूर्वक किया। वह बोतलों के माध्यम से पौधों में पानी डालते थे। उन्होंने बोतलों में छिद्र करके उसे पौधों से 6 इंच दूर लेकिन जड़ों के पास लटका दिया। गर्मियों में, वे इन बोतलों में पानी भर देते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि पानी एक पौधे से होते हुए दूसरे पौधों की जड़ों तक पहुंचता रहे। इस तरीके से एक ही बोतल से कई पौधों को पानी दिया जा सकता है। उदाहरण के लिए, यदि आम के पेड़ को डिब्बों के माध्यम से पानी देना हो तो 300 पौधों के लिए 300 डिब्बों की आवश्यकता होती है, लेकिन इस तरीके में वह एक बर्तन से 26 पौधों को पानी आपूर्ति कर सकते हैं। समग्र रूप से, इस हिसाब से आम के पौधों में पानी देने के लिए 12 बर्तनों की आवश्यकता होती है, जिससे 288 बर्तनों की बचत होती है साथ ही समय और श्रम की भी बचत होती है। इस तरीके से, वह न्यूनतम पानी का उपयोग कर अधिकतम उपज प्राप्त करते हैं। वर्ष 2010 में, उन्होंने एक ऋतु में लगभग 20 टन फलों की उपज प्राप्त की। उन्होंने पपीता के फलों की तुड़ाई के बाद आम के फलों को प्राप्त किया। वह अपने खेत में मधुमक्खी पालन भी करते हैं। ■

**एन०आर० चन्द्रशेखर**
जैविक किसान एवं प्रगतिशील किसान
नेनामन्नाहाली, कोलार तालुक
कोलार जिला, कर्नाटक
टेलीफोन : 081522389, मोबाइल : 9448342803

**Water- Lifeline for livelihood**
LEISA INDIA, Vol. 17, No.3, Sept. 2015

# नेपाल में स्थाई क्षेत्रीय खाद्य चक्र

तुलसी गिरी

*सुदूर विदेशों से अनाजों का आयात करना तथा मशीनों एवं रसायनों के अत्यधिक उपयोग से उपज प्राप्त करना कृषि की वर्तमान समस्याओं का समाधान नहीं है। अगर हम कृषि खाद्य प्रणाली का कोई नया तरीका नहीं खोज सकते तो हम अपने पुराने अभ्यासों के ऊपर पुनः विचार कर उनमें सुधार कर सकते हैं और क्षेत्रीय खाद्य चक्र ऐसी ही एक प्रणाली है, जो खेती को स्थाईत्व प्रदान करती है।*

आगे आने वाले दशकों में, एशियन मध्य वर्ग विश्व का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपभोक्ता समूह होगा। नेपाल में भी, अब इस नये रहन–सहन से मेल खाते वैकल्पिक उत्पादों की मांग करने वाला मध्यवर्ग दिखने लगा है। ये नये उपभोक्ता देश में नये वैश्विक बाजारों एवं पूंजी को तैयार कर रहे हैं। ऐसे समय में जबकि वैश्वीकरण के साथ हमारे समुदायों में बहुत तेजी से परिवर्तन हो रहे हैं, हमारे दैनिक जीवन में बाजार एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। आज प्रत्येक समाज का सपना ''आधुनिक और विकसित'' का है, जो जी0डी0पी0 अर्थ व्यवस्था से निर्धारित हो रहा है। विशेषकर, ''विकासशील समुदाय'' अपनी मौलिकता को खोते जा रहे हैं और इस परिवर्तित दौर में अपने सपनों को पूरा करने के लिए कड़ा संघर्ष कर रहे हैं।

इन सबके कारण उत्पादन गतिविधियों जैसे कृषि और खाद्य पर आधारित समुदायों एवं संस्कृतियों पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ा है। बहुत से लोग या तो स्वेच्छा से खेती छोड़ रहे हैं या फिर दबाव में आकर खेती से विमुख हो रहे हैं। इन सबके पीछे बहुत से कारण हो सकते हैं, परन्तु उनमें से प्रमुख कारण ''आर्थिक प्रोत्साहन'' का न मिलना है।

नेपाल के बहुत से युवा अपने घरों को छोड़कर आजीविका के विकल्पों की तलाश में शहरों या विदेशों की ओर पलायन कर रहे हैं। विशेषकर युवा पीढ़ी की अब खेती में

एक अभ्यास प्रशिक्षण सत्र

फोटो : लेखक

कोई रूचि नहीं रह गयी है। इसका कारण यह है कि–

- नौकरी की तुलना में खेती किसानी अब एक सम्माननीय पेशा नहीं रह गया है, जिसे शहरों के आधुनिक आर्थिक बाजार में स्वीकृति मिले।
- ''पारिवारिक कृषि'' प्रकृति में निहित है, जो आधुनिक समाज की बदलती आवश्यकताओं से मेल खाती उच्च आर्थिक वापसी नहीं सुनिश्चित कराती है।
- विभिन्न कारकों जैसे खराब मौसमी परिस्थितियों आदि से जूझने के कारण कृषि एक पेशा या व्यवसाय के तौर पर कठिन दौर से गुजर रही है। इन मौसमी परिस्थितियों के ऊपर मनुष्य का कोई नियन्त्रण नहीं होने के कारण बहुत बार खेती में अनिश्चितता बनी रहती है।

जब ये छोटे जोतदार या खेतिहर परिवार इन कठोर वास्तविकताओं का सामना करते हैं तो ऐसी स्थिति में संघों व औद्योगिक खेती कम्पनियों के विकल्प खुल जाते हैं। इस प्रकार नेपाल और अन्य बहुत से विकासशील समुदायों के स्थानीय उत्पादक, पर्यावरणीय संकटों का सामना करने तथा अपनी आजीविका खोने के जोखिम के कारण इन वैश्विक कम्पनियों से बहुत पीछे रह जाते हैं।

### कार्यान्वयन

सीमा पर के क्षेत्रों में बसने वाले ग्रामीण समुदाय विशेशकर युवा वर्ग में अधिक पलायन हो रहा है। इसका बड़ा प्रभाव क्षेत्रीय आर्थिक विकास के साथ ही खाद्य सुरक्षा पर भी पड़ रहा है। नेपाल जैसे देशों में संतुलित विकास को प्रोत्साहन देने, सामाजिक असंतुलन व पर्यावरणीय नुकसान को रोकने के लिए पहल करने की आवश्यकता है। स्थाई (जैविक) उत्पाद व उत्पादन के ऊपर जागरूकता उत्पन्न करना इस समाधान का एक भाग है। अध्ययन यह प्रदर्शित करते हैं कि कृषि के क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा करते हुए लाभ पाने के लिए ''जैविक उत्पाद'' एक मुख्य विकल्प हैं।

यह पहले ही स्पष्ट हो चुका है कि हमारी खाद्य प्रणाली एक लम्बी दूरी की आयात व्यवस्था तथा उच्च मशीनीकृत एवं रसायन आधारित उत्पादन पर आधारित है और यह निश्चित तौर पर समाधान नहीं है। हमें किसी भी नये

> ग्रामीण क्षेत्रों के साथ शहर का जुड़ाव खाद्य चक्र के माध्यम से है; यह जुड़ाव इस तरह से है कि ग्रामीण क्षेत्र के लोग यदि जैविक खेती करते हैं तो शहरी उपभोक्ताओं को जैविक रूप से उत्पादित खाद्य ही मिलेगा।

फोटो : लेखक

द बाजार– मॉडल दुकान

प्रकार की खाद्य प्रणाली या कृषि को खोजने की आवश्यकता नहीं है, वरन् हमें शान्त रहकर यह सोचने की आवश्यकता है कि हमारे पूर्वज क्या करते थे, वे किस प्रकार की खेती करते थे और समुदायों के बीच भोजन का बंटवारा किस प्रकार का था?

''क्षेत्रीय खाद्य चक्रों'' का विचार विश्व का वैश्वीकरण प्रारम्भ होने से पहले से ही विद्यमान है। पहले समुदाय स्व–स्थाई होते थे। सीमा पर के क्षेत्र आपस में खाद्यों का आदान–प्रदान करते थे और हमारे समाज तथा उसमें रह रहे समुदाय और संस्कृति फल–फूल रहे थे। हमारा मूलभूत विचार तो उन पुराने या पहले से चले आ रहे विचारों को फिर से देखने एवं उन्हें पुनर्जीवित करने का है, जो आधुनिक बदलावों एवं विकास के दौर में अपने–आप को बनाये रखने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। बिना किसी अपवाद के, आधुनिक तकनीकों एवं नवीन पहल पैतृक रूप से एक से दूसरे को हस्तान्तरित किये जा सकते हैं, नतीजतन यह अधिक प्रभावी व अधिक स्थाई होते हैं।

### बाजार

वर्ष 2009 में, श्री तुलसी गिरी और श्री टंका राज सुबेधी नाम के दो युवा दोस्तों ने इन चुनौतियों से लड़ने का निर्णय लिया और उन्होंने नेपाल के बाजारों में स्थाईत्व लाने के विचार को साकार करने के उद्देश्य से ''डेवलपमेण्ट वॉयेज'' नाम से एक कम्पनी प्रारम्भ की। ''बाजार : व्यापार मेला और जैविक के लिए बाजार'', एक आपूर्ति श्रृंखला प्रबन्धन व्यापार ''साथी बायो फार्म'', प्रशिक्षण की सुविधा के साथ पेरमा संस्कृति / जैविक खेती एवं ''जैविक जीवन'' नाम से कृषि पर्यटन सेवा व्यापार का प्रारम्भ इस कम्पनी के माध्यम से किया गया। कृषि पर्यटन सेवा व्यापार से सम्बन्धित अधिक जानकारी के लिए इसकी अधिकृत वेबसाइट www.organiclivingnepal.org उपलब्ध है। वर्ष 2012 में इसके सहयोगी किसानों के साथ मिलकर शुरू

किया गया ''द बाजार, कृषि सहकारी'' सफल प्रयास रहा है। हमारे ये व्यापार नेपाल के पोखरा शहर में स्थित हैं, जो नेपाल के महत्वपूर्ण पर्यटन क्षेत्रों में से एक एवं देश का दूसरा सबसे बड़ा शहर है।

वर्ष 2008 में पोखरा से लगभग 20 किमी0 दूर रिवान गांव में ''स्थाई विकास में युवा'' नामक परियोजना से उसी गांव के रहने वाले तुलसी एवं उसके दोस्तों का जुड़ाव होने के पश्चात् इन सभी गतिविधियों/व्यापार मॉडलों की शुरूआत हुई। इस परियोजना का परिणाम यह हुआ कि रिवान गांव के युवाओं में अपनी आजीविका विकल्पों के तौर पर जैविक सब्ज़ी उत्पादन, मछली पालन एवं समुदायिक पर्यटन के लिए अपनी स्वयं की सहकारी समितियों की स्थापित करने के लिए रूचि विकसित हुई। रिवान गांव से पलायन कर गये बहुत से युवा वापस गांव में आकर इस परियोजना से जुड़ गये। उत्पादक सहकारी समितियों के स्थापना के साथ ही बाजार श्रृंखला की आवश्यकता अगली चुनौती थी। इसलिए टंका और तुलसी इस काम के लिए आगे आये और उन्होंने उद्यमिता में अपनी अलग पहचान बनाई। 2012 तक, रिवान गांव के किसानों ने अपने द्वारा स्थापित सहकारी समिति एवं ''साथी बायो फार्म'' के माध्यम से द बाजार के प्रथम फुटकर निकास के लिए जैविक सब्जियों की आपूर्ति की। धीरे–धीरे बिक्री व्यापार बढ़ता गया। बाजार से उपभोक्ताओं का जुड़ाव साथ – साथ नगदी आवक भी बढ़ती गयी। अन्य समुदायों से जुड़े बहुत से किसान इस नेटवर्क से जुड़ना चाहते थे और यहीं से ''क्षेत्रीय खाद्य चक्र'' के हमारे विचार को आधार मिला।

पोखरा के आस–पास के क्षेत्रों के छोटे–मझोले किसानों को आपूर्ति श्रृंखला प्रबन्धन सेवाओं को उपलब्ध कराने के लिए द बाजार (www.thebazaar.com.np) हमारी कम्पनी के तहत् एक प्रमुख ब्राण्ड थी। सीमा पर के क्षेत्रों में स्थाई क्षेत्रीय खाद्य चक्र की एक शुरूआत करने के पीछे प्रमुख विचार यह था कि यदि यह सफल होता है तो इसे अन्य सीमा क्षेत्रों पर बढ़ाया जा सके। क्योंकि हम यह मानते हैं कि छोटे खेतिहर परिवारों द्वारा जैविक खेती उनकी अपनी खाद्य चक्र के आधार पर की जाती है। उत्पादों की बिक्री से आस–पास के क्षेत्रों में आर्थिक प्रभाव पड़ता है। स्थाई क्षेत्रीय खाद्य चक्र भविष्य में पूरे ग्रह को भोजन उपलब्ध कराने का एक स्थाई रास्ता है।

''ग्रामीण क्षेत्रों और शहर के खाद्य चक्र आपस में जुड़े होते हैं। इस जुड़ाव में लोग जैविक खेती, खाद्य प्रसंस्करण और जैविक उत्पादित खाद्य को उपभोक्ताओं तक वितरित करने का काम कर रहे हैं। यह समुदाय एवं सहकारी ढांचों के सहयोगियों का एक मेल है। खाद्य चक्र के केन्द्र में स्थाई पर्यटन का एक नया विचार है, जो नेटवर्क के आर्थिक मूल्य को आवश्यक रूप से बढ़ाता है।''

वर्तमान में, द बाजार के माध्यम से द बाजार कृषि सहकारी समिति से जुड़े 300 से अधिक लघु सीमान्त किसानों को आपूर्ति श्रृंखला एवं बाजार की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। हमारे ये किसान पोखरा के आस–पास के 7 से अधिक गांवों में फैले हुए हैं। इनके काम की प्रकृति भिन्न–भिन्न है। इनमें से कुछ किसान अपने व्यक्तिगत खेत पर काम करते हैं तो कुछ किसान समूहों के रूप में गठित होकर काम कर रहे हैं, जबकि अन्य दूसरे समुदाय आधारित उत्पादन सहकारी समिति में शामिल हैं। पोखरा में द बाजार की एक थोक व एक फुटकर इस प्रकार कुल दो दुकाने हैं, जो सीधा प्रदान सेवाओं के माध्यम से अपने उपभोक्तओं तक पहुंचती है। इसके साथ ही यह शहर तक अपने उत्पादों को ले जाने के लिए सभी उत्पादों हेतु संभार–तंत्र भी उपलब्ध कराती है। इसके अलावा यह सहकारी समिति अपने सहयोगी किसानों को जैविक खेती, बचत एवं ऋण सुविधा आदि में विशेषज्ञता एवं तकनीकी जानकारी प्रदान करने के साथ ही साथ निवेश उपलब्ध कराने वाले सरकारी कार्यक्रमों से जुड़ाव बनाने हेतु भी सहयोग प्रदान करता है। द बाजार ने जिला कृषि विकास कार्यालय सहित विभिन्न हितभागियों के सहयोग से वर्ष 2013 में ''सहभागी गारण्टी प्रणाली'' की शुरूआत की, जो उत्पादकों तथा उपभोक्ताओं के बीच आपसी विश्वास बनाये रखने तथा गुणवत्ता नियन्त्रण का सबसे बढ़िया तरीका है।

हमारे आपूर्ति श्रृंखला की सबसे बड़ी अच्छाई यह थी कि उन किसानों को भी हमारी सुविधाएं मिल जाती थीं, जो बहुत कम उत्पादों के होने के कारण हमारे बाजार श्रृंखला का हिस्सा नहीं बन पाते थे। जैविक उत्पादों के उत्पादन एवं उनकी बिक्री दोनों चुनौतियों से निपटने के लिए इस सहकारी समिति का गठन किया गया। उत्पादन के क्षेत्र में सहकारी समिति जहां जैविक उत्पाद की मात्रा, प्रजाति एवं गुणवत्ता बढ़ाने के लिए उत्पादकों के साथ समन्वय बनाने तथा उनकी स्थानीय क्षमता विकसित करने का काम कर रही थी, तो वहीं बिक्री के क्षेत्र में, मध्य वर्गीय नेपाली उपभोक्ताओं को व्यापार मेला में आने और जैविक उत्पादों को अपनाने के लिए संवेदित करने का काम किया जा रहा था। एक बार जब उत्पादन और बिक्री के बीच सम्बन्ध स्थापित हो गया तब किसानों और द बाजार दोनों को वास्तविक मांग एवं आपूर्ति की जानकारी होने लगी। सम्बन्ध स्थापित हो जाने के बाद लाभों को सुरक्षित रखने, बाजारीकरण अभियान को सहयोग प्रदान करने, कृषिगत

नव पहलों तथा नीतिगत एडवोकेसी का काम भी सहकारी समिति करने लगी।

## भावी विकास

निश्चित तौर पर, उपरोक्त सभी उपलब्धियों तक पहुंचना कम्पनी के लिए आसान नहीं था। अभी भी इसमें स्थिरता नहीं है। हमें प्रत्येक स्तर पर बहुत सी चुनौतियों एवं बाधाओं का सामना करना पड़ा। ''क्षेत्रीय खाद्य नेटवर्क'' का विचार सिर्फ वित्तीय दृष्टिकोण से ही कठिन नहीं था, वरन् पूरी आपूर्ति श्रृंखला को भी फिर से प्रबन्धित करने की आवश्यकता थी। शुरूआती दिनों में, छोटे मझोले किसानों में जैविक और बाजार आधारित खेती करने हेतु जैविक निवेशों की उपलब्धता, तकनीकी और वित्तीय सेवाओं तक पहुंच, उपभोक्ताओं की जागरूकता और सुविधायुक्त बाजार प्रणाली, इन सभी का अभाव था।

इन मुद्दों को समझते हुए तथा अपने दिन–प्रति दिन के अनुभवों के आधार पर, हमने वर्ष 2013 में ज्यूरिच, स्विटजरलैण्ड की एक सामाजिक उद्यम के साथ समन्वय स्थापित किया। इस सामाजिक उद्यम के उद्देश्य हमारे उद्देश्यों से मिलते थे। इस समन्वय के पश्चात् हमने स्थाई क्षेत्रीय खाद्य चक्र के निर्माण हेतु युवाओं के लिए विकल्प विकसित करने का प्रस्ताव दिया और आज हम ''खाद्य चक्र अकादमी'' नाम से एक व्यवसायिक प्रशिक्षण एवं शिक्षा कार्यक्रम विकसित करने का कार्य कर रहे हैं। सीमा पर के क्षेत्रों के युवाओं एवं उद्यमियों के सशक्तिकरण, पहल करने तथा योग्यता प्रदान करने के लिए ''खाद्य चक्र अकादमी'' एक केन्द्र होगा और वर्तमान व्यवसाय प्रशिक्षण स्थलों एवं उदाहरणों के रूप में कार्य करेंगे जहां युवा उद्यमी यह सीख सकेंगे कि किस प्रकार वे स्वयं का और अपने क्षेत्र का भविष्य स्थाई कर सकते हैं। यह अकादमी पूरे विश्व में सीमा पर के क्षेत्रों में स्थाई क्षेत्रीय खाद्य चक्रों के गठन को सहयोग प्रदान करने हेतु अध्ययन कार्यक्रम प्रस्तुत कर रही है।

■

**तुलसी गिरी**
सीईओ, डेवलपमेण्ट वोयेज
पोखरा– 17, कास्की,
नेपाल
ई–मेल : giritulsi@@gmail.com

**Rural-urban linkages**
LEISA INDIA, Vol. 17, No.2, June 2015

पृष्ठ 6 का शेष भाग.....

## परिणाम

मई–जून, 2014 में लिये गये मृदा नमूनों के परिणाम यह प्रदर्शित करते हैं कि मिट्टी में जैविक कार्बन की मात्रा बढ़ी है और पिछले वर्ष, 2013 में 0.354 प्रतिशत की तुलना में अब यह बढ़कर 0.457 प्रतिशत हो गया है। मिट्टी में जैविक कार्बन की मात्रा बढ़ने से अन्य बहुत से लाभ भी हैं। विशेषकर वर्मी कम्पोस्ट का प्रयोग करने से मृदा उर्वरता भी बढ़ी है। वे महिलाएं जो अपनी पोषण वाटिका में वर्मी कम्पोस्ट का उपयोग कर रही हैं, उन्हें भी अच्छी उपज प्राप्त हो रही है। एक अनुमान के मुताबिक लगभग 6 महीनों में 500 किग्रा0 से अधिक सब्ज़ियां उत्पादित की गयीं।

परियोजना के एक वर्ष के अनुभव यह प्रदर्शित करते हैं कि यदि हमें उपज को बढ़ाना है तो मृदा स्वास्थ्य को उन्नत करना होगा। जिसे किसान कुछ निश्चित गतिविधियां अपनाकर पूरा कर सकता है और यदि ये गतिविधियां सहभागी तरीके से की जायें तो और तेजी से इसके परिणाम मिलते हैं।

■

**पुरुषोत्तम जांगिड़, मोनू के राठौर रनवीर, एस शक्तावत एवं वी खटाना**
**ज्वाइण्ट इनीशियेटिव फार विपेज डेवलपमेण्ट ( जीवा )**
**रेलमगरा, जिला– राजसमन्द, राजस्थान**
ई–मेल : vkhatana@PYXERAGlobal.org

**Soil for life**
LEISA INDIA, Vol. 17, No.1, March 2015

# जब मिट्टी बोली

**प्रो० एम० महादेवप्पा**

मेरा आप सबसे घरेलू सम्बन्ध है। अपने जन्म से लेकर मृत्यु तक लोग प्रतिदिन मुझे देखते हैं। बावजूद इसके बहुत कम ही ऐसे लोग हैं, जो मुझे बहुत अच्छी तरह से जानते हैं। अधिकांश लोग तो मुझे एक निर्जीव वस्तु के तौर पर देखते हैं। वे न केवल मुझे गलत समझते हैं कि मेरे अन्दर जीवन नहीं है, वरन् वे दूसरों को अपमानित करने के लिए मेरे नाम का उपयोग भी करते हैं। इनमें से कुछ यहां उदाहरण–स्वरूप प्रस्तुत हैं – वे कहते हैं, तुम क्या जानो मिट्टी के माधो, मन्नू आदि। वे मेरे ऊपर तरह तरह के हथियारों से ठोंकते हैं, धमाके करते हैं, खुदाई करते हैं, मुझे काटते हैं, मेरे ऊपर छेद करते हैं, मुझे रगड़ते हैं, मुझे गीला करके बांधते हैं, मुझे चूरा बनाते हैं, मेरा चूल्हा बनाकर उस पर खाना बनाते हैं, मुझे पानी में रखते हैं, मुझे ईंट में बदल देते हैं और दशकों–शतकों तक मुझे एक ही स्थान पर रखते हैं। जब वे लोग यह सब करते हैं तो वे यह समझते हैं कि मेरे अन्दर कोई जीवन नहीं है। लेकिन सच्चाई तो यह है कि मैं निर्जीव नहीं हूं। मैं जिन्दा हूं और हमेशा जीवन से भरपूर हूं। क्या तुम्हें उन मित्रों और रिश्तेदारों के बारे में जानकर आश्चर्य नहीं होगा, जो दशकों एवं शताब्दियों बाद तक भी मुझे मरने नहीं देंगे? यह उन लोगों से परिचित होने का बेहतर अवसर है।

सूर्य और चन्द्रमा, हवा, पानी, खाद मिट्टी, सभी तरह की वनस्पतियां एवं मनुष्य सहित सम्पूर्ण प्राणी जगत मेरे सबसे नजदीकी जान–पहचान वाले हैं, जो मुझे भी अच्छी तरह जानते हैं। मनुष्यों को छोड़कर वनस्पतियां एवं प्राणी जगत की सभी प्रजातियां स्वार्थी नहीं हैं। वे मुझसे बिना कोई अपेक्षा किये मेरी सारी जरूरतों को पूरा करती हैं।

संक्षेप में यह कहना सही है कि मानव जनित निर्माणों को छोड़कर सभी प्रकार के दुखों का इलाज मेरे द्वारा किया जाता है। जब मनुष्य जानते हुए या अनजाने में मिट्टी को निगलने का रास्ता अपना रहा है तो इससे मेरे शुभचिन्तकों, मुझसे अपनी आजीविका चलाने वालों, मेरे विकास, मेरे मित्रों की चरम प्रगति, उनकी बसाहट आदि सभी पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। मैं कमजोर होती जा रही हूं, मनुष्य भी गरीब से गरीब होता जा रहा है तथा पशुओं पर भी गंभीर दुष्प्रभाव पड़ रहा है। इस पृथ्वी पर सृष्टि का उदय होने के समय से ही वनस्पतियों, प्राणी जगत तथा सृष्टि के बीच आपसी लेन–देन होने से सभी एक दूसरे की मांगों को सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में पूरा करते थे। केवल मनुष्य ही इस परम्परा से बाहर आया। मैं भी अपने दूसरे मित्रों से मिलने के लिए उत्सुक हूं। अतः इस मुद्दे पर बाद में चर्चा करेंगे।

## सूर्य

मेरी सृष्टि, मेरा अस्तित्व, विकास, मेरी वनस्पतियों एवं प्राणी जगत के जनसंख्या वृद्धि एवं सामूहिक विकास के लिए आवश्यक आदर्श तापमान, ये सभी सूर्य पर निर्भर करते हैं। विशिष्ट जीवों के लिए आवश्यक अलग–अलग तापमान को उपलब्ध कराने के अतिरिक्त, मुझे मिलने वाली किरणें एवं प्रकाश, सभी कुछ सूर्य के ऊपर निर्भर करता है। सूर्य मुझसे पुराना है और यह पूरे विश्व को अंधेरे से मुक्त रखने के लिए प्रकाश बिखेरता है और सूर्य की सबसे अधिक धार्मिक मान्यता भी है। वह जानता है कि सिर्फ दिन या केवल रात होना खतरनाक होता है। अतः वह एक दिन के आधे समय में छुपा रहता है और फिर से उग जाता है। क्या प्रतिदिन उगने का उसका निर्धारित कार्यक्रम नहीं है और वह एक जैसा ही हमेशा क्यों लगता है? आदि प्रश्नों से बचने के लिए कभी–कभी बादलों के पीछे छुप जाता है और चन्द्रमा हमारे और उसके आ जाता है। इस घटना को ही चन्द्र या सूर्य ग्रहण कहते हैं। यह दृश्य बहुत अमूल्य होता है। एक सूर्य या चन्द्र ग्रहण को पृथ्वी के विभिन्न भागों पर विभिन्न तरीके से देखा जाता है जिसके वैज्ञानिक पहलू से मानव परिचित होना चाहता है। पृथ्वी पर विद्यमान सृष्टि को छाया प्रदान करने के लिए अपनी स्वयं की शक्ति तथा समुद्र एवं महासागरों के जल के सहयोग से यह बादलों का निर्माण करता है, पृथ्वी पर वर्शा करता, पृथ्वी को जल से नहलाता है, मृदा की उर्वरता को बढ़ाता है और सभी प्राणी जगत को जीवित रखने तथा वृद्धि में सहयोग करता है। इस प्राकृतिक घटना की विशेषज्ञता के अतिरिक्त उसका अपने दोस्त चन्द्रमा के साथ एक समझौता के तहत् चन्द्रमा सूर्य की चमक के बगैर पृथ्वी को रौशन करता है, जिससे नव विवाहित जोड़ों तथा यात्रियों के लिए एक विशेष वातावरण का निर्माण होता है। इस क्रिया के माध्यम से रात का सतत् अंधेरा दूर होता है। चन्द्रमा अपने स्वयं के प्रकाश से पृथ्वी पर शीतल चांदनी का विस्तार करता है, जो प्रकाश का स्रोत होता है। यदि चन्द्रमा का प्रकाश भी सूर्य के प्रकाश जैसा ही होता तो उसकी महत्ता एवं आकर्षण खत्म हो जाता है। इसलिए

चन्द्रमा को छाया प्रदान करने वाले बादलों की मदद से वह हमें चन्द्रमा के प्रकाश की महत्ता को महसूस कराता है।

### चन्द्रमा और तारे

मैंने अपने दूसरे मित्र चन्द्रमा के बारे में पहले ही ऊपर बता दिया है। सूर्य और चन्द्रमा विश्व की दो महान हस्तियां हैं। बिना एक–दूसरे की सहभागिता के इनमें से कोई भी अकेले कुछ नहीं कर सकता है।

हमारे साथ विद्यमान रहने वाले ये चमकते और टिमटिमाते तारे आंखों और मस्तिष्क को वास्तविक आनन्द की अनुभूति कराते हैं। कभी–कभी ऐसा लगता है कि ये तारे जमीन पर गिर जायेंगे और मानव जगत तथा उसमें निवास करने वाले अन्य सभी जीवों को जला डालेंगे, लेकिन ऐसा होता नहीं और वे तुरन्त छिप जाते हैं। इनको देखने का कोई टिकट नहीं लगता। ऐसा लगता है कि यदि तारे हमेशा इसी तरह दिखते रहे तो उनका महत्व कम हो जायेगा, इसलिए वे कभी–कभी बादलों के पीछे छुप जाते हैं। हालांकि वे बहुत बड़ी संख्या में हैं, फिर भी न तो कभी वे आपस में लड़ते हैं और न ही राजनेताओं की तरह अपना स्थान बदलते हैं। बीच–बीच में वे ध्रुव तारे के साथ–साथ मनुष्यों को दिशा का भी ज्ञान कराते हैं।

### हवा

पूरी सृष्टि के लिए हवा जीवन है। प्रत्येक स्थान पर पायी जाने वाली, एक स्थान से दूसरे स्थान पर फैलने वाली तथा नुकसानदायक कूड़ा–कचरा, धूल आदि अवांछित वस्तुओं के लिए भी हवा जरूरी है। हवा तापमान को एक निश्चित संतुलित स्तर तक लाती है और सभी जीवों को गतिशील बनाये रखने के लिए वाहक का काम करती है। हवा सभी जीवों की श्वांस है, जिसे जीवन कहते हैं। हवा के बहुत से महत्वपूर्ण कार्य हैं, जैसे– पॉलिनेशन में सहयोग करना, बीजों को बिखेरना, वातावरण में तापमान और नमी का संतुलन बनाये रखना, पर्यावरण को स्वच्छ रखना आदि। हमेशा बहने वाली हवा इस बात की गवाह है कि मानव जगत हमेशा गतिमान रहेगा।

### जल

यदि मेरा मित्र जल यहां नहीं होता तो कोई भी जिन्दा नहीं बचता। यदि मुझे जल नहीं मिलता तो मैं भी बंजर हो जाती। गंगा बिलकुल मेरे निकट से होकर बहती है। मैं उसे इकट्ठा कर समुद्र, महासागर एवं खाड़ी का निर्माण करने के साथ ही सभी प्रकार के छोटे जल स्रोतों जैसे झील, तालाब, कुंआ आदि को बनाती हूँ। गंगा के साथ, मुझे मिलाकर सभी तरह के देवी–देवताओं की आकृति में तैयार कर दिया जाता है। जल का प्रयोग कर मनुष्य सभी प्रकार की फसलें उगाता है।

मनुष्य, जानवर, पौधे, सूक्ष्म जीवाणु सभी मेरे बच्चे हैं। इनमें सबसे अधिक स्वार्थी बच्चे मनुष्य हैं। फिर भी बच्चे तो बच्चे ही होते हैं। मैं बिना नाराज हुए अपने सभी बच्चों को सभी सुविधाएं उपलब्ध कराती हूं। फिर भी उनमें से कुछ बहुत ही संकुचित प्रकृति के होते हैं। वे सारा लाभ स्वयं ले लेना चाहते हैं, और अपनी स्वार्थी प्रवृत्ति के चलते उसे गुप्त रखते हुए मेरे अबोध बच्चों के लिए समस्या का कारण बनते हैं। मनुष्यों को छोड़कर अन्य सभी प्राणी जगत मुझे सुरक्षा प्रदान करते हैं, आपसी समझ–बूझ के साथ रहते हैं। यदि भूमिगत जल के रूप में जल की उपलब्धता नहीं रहती तो यहां कुछ भी नहीं रहेगा। कोई भी प्राणी यहां जिन्दा नहीं बचेगा। यह दुर्भाग्य ही है कि मौजूदा जल के महत्व को न समझते हुए इस समय जल का दोहन तेजी से हो रहा है और यह अपने निचले स्तर पर पहुंच गयी है। यदि जल का उपयोग वैज्ञानिक और बुद्धिमत्तापूर्ण तरीके से किया गया तो पृथ्वी पर जीवन आसान एवं कठिनाई मुक्त होगा।

### डरभा घास

पृथ्वी पर पाये जाने वाले असंख्य पौधे मुझे सुरक्षात्मक कवच प्रदान करने का कार्य करते हैं। डरभा घास उनमें से एक है, जिसे हम हरियाली के नाम से भी जानते हैं। घास न होने से वर्षा के दौरान मेरी उपरी परत बह जाती है। मृदा क्षरण को रोकने के लिए घास की भूमिका काफी महत्वपूर्ण होती है। ऐसे बहुत कम लोग हैं, जो मृदा उर्वरता एवं पर्यावरण की सुरक्षा में घासों के महत्व को जानते हैं। पर्यावरण की सफाई के नाम पर शहरी क्षेत्रों में सड़क के किनारे उगने वाली घासों को साफ कर दिया जाता है। इस कार्य को करने से बारिश के जल में हमारी ऊपरी परत बह जाती है और हवा के माध्यम से बहुत दूर तक चली जाती है, जिससे हमारी उर्वरता का ह्रास होता है। यह एक अवैज्ञानिक तरीका है।

लोगों में जानकारी का अभाव होने के कारण ऐसा है। जब अन्य पौधों को हटाया जाय तो भी घास को हटाने की आवश्यकता नहीं है। कम से कम आज घासों की महत्ता एवं मुझे खुरचने पर रोक लगाने जैसे विषयों पर जागरूकता अभियान चलाना बहुत उपयोगी होगा। कौन होगा, जो मुझे गहरे हरे रंग की घासों से ढंका नहीं देखना चाहता? न केवल यही, बल्कि घास का उपयोग दवाओं के रूप में भी किया जाता है तथा इसे धार्मिक अवसरों पर पूजा के दौरान देवी–देवताओं पर चढ़ाया जाता है। इन सबके बारे में जानते हुए, यदि सभी को एक–दूसरे के साथ

पनपने की संस्कृति है, तो मेरे और घास सहित सभी लोग प्रसन्न रहेंगे।

## खाद मिट्टी

खाद मिट्टी मेरा एक और नजदीकी मित्र है। इसके महत्व को बहुत कम लोग समझते हैं। जो लोग इसे अच्छी तरह नहीं जानते हैं, वे इसका समुचित ख्याल नहीं रखते, जिससे इसका ह्रास होता है। इसे सुरक्षित रखता तथा बढ़ाना बहुत ही आसान है। इसके साथ हजारों सूक्ष्म जीवाणु पनपते हैं और मुझे उर्वरता प्रदान करते हैं। दूसरे शब्दों में वे मुझे समृद्ध बनाते हैं।

## मेरी संतानें

मैं अपनी संतानों से बहुत प्यार करती हूं, जो न केवल असंख्य हैं, वरन् उनमें विविधता भी है, जिसे एक आश्चर्य कहा जा सकता है। मेरी संतानों में एक तरफ तो सूक्ष्म जीवाणु हैं, जिन्हें नंगी आंखों से नहीं देखा जा सकता है तो दूसरी तरफ हाथी जैसे विशालकाय जीव भी हैं। मेरे परिवार में मनुश्यों को नुकसान पहुंचाने वाले जीव भी शामिल हैं। कुछ बहुत खतरनाक पौधे जैसे लन्ताना, प्रोसोफिस, उपटोरिया, अजारटस आदि हैं, जो बहुत सालों से विद्यमान हैं। पांच दशकों पहले, पार्थेनियम नामक बहुत आक्रामक एवं खतरनाक पौधा लैटिन अमेरिका से हमारे देश में आया। विनाशक कांग्रेस घास नाम से प्रचलित इस घास में एक पौधे से 15000 से अधिक पौधे तैयार की एक क्षमता है। मिट्टी में इसके रस के मिल जाने से यह न केवल अन्य पौधों की बढ़त को रोकती है, वरन् यह अन्य दूसरे पौधों को दबाती भी है। इससे मनुष्यों को एलर्जी होती है और यह मनुश्यों तथा पशुओं में कई बीमारियों का कारण बनती है। फिर भी यह संतोषजनक है कि हमारी संतानों में से कुछ इसके शत्रु भी हैं, जो इस दुष्ट घास को नियन्त्रित रखते हैं। लेकिन मनुष्यों की उदासीनता का हाल तो यह है कि वे इसके बारे में चिन्तित होने के बजाय कुछ अच्छे पौधों को नुकसान पहुंचा रहे हैं और पार्थेनियम पौधे को उगने व बढ़ने के अनुकूल जलवायु व वातावरण प्रदान कर रहे हैं। सभी माताओं की तरह मैं भी अपने बच्चों पर बहुत ध्यान देती हूं और उन्हें जीवित तथा फलते–फूलते देखना चाहती हूं।

## मेरा स्वास्थ्य

जब मैं जिन्दा हूं तो यह स्वाभाविक है कि मैं भी दूसरों की तरह बीमार पडूंगी। मनुष्य की लालची प्रवृत्ति के चलते तथाकथित वैज्ञानिक विधियों व रसायनों के अत्यधिक उपयोग के परिणामस्वरूप चिन्ताजनक परिस्थितियां उत्पन्न हो गयी हैं। पोषण एवं उसकी सामग्रियों के अभाव के कारण मुझे बहुत परेशानी हो रही है। थोड़ा संतोष इस बात का है कि अब लोग मेरे ऊपर अध्ययन कर रहे हैं तथा मेरी परिस्थिति जानने के लिए जांच कराने हेतु मुझे प्रयोगशाला में भेज रहे हैं और छोटे स्तर पर ही सही, परन्तु मेरी देख–भाल करना प्रारम्भ कर दिये हैं, परन्तु अभी भी, ऐसे लोगों की संख्या काफी कम है। एक संतुष्टिजनक स्तर तक मेरा स्वास्थ्य बनाये रखने के लिए 16 पोषक तत्वों की बहुत आवश्यकता होती है। मेरी संतानों में अलग– अलग लोगों के लिए अलग–अलग मात्रा में पोषण की आवश्यकता होती है। इसलिए यह बहुत आवश्यक है कि इन पोषणों को वैज्ञानिक तरीके से उपलब्ध कराया जाये। मेरे ऊपर पैदा होने वाले जीवों, वनस्पतियों की वृद्धि की गति तथा रंग को देखकर मेरे स्वास्थ्य का अन्दाजा आसानी से लगाया जा सकता है। जो मेरे स्वास्थ्य के प्रति ध्यान देते हैं और मेरी देख–भाल अच्छी तरह से करते हैं, मैं अच्छी उपज तथा लाभप्रद फसल देकर उन लोगों का सहयोग करती हूं। यदि कृषि विज्ञान केन्द्र एवं कृषि विश्व विद्यालयों तथा सरकारी कृषि विभागों के प्रयोगशाला में जांच के उपरान्त दिये गये सुझावों को लोगों द्वारा अपनाया जाये तो मेरा जीवन अर्थपूर्ण हो जायेगा। मैं उन लोगों को धन्यवाद देना चाहूंगी, जो मेरे शुभचिन्तक हैं, मेरी देख–रेख करते हैं और अवांछित लोगों से मेरी सुरक्षा करते हैं।

## एक निवेदन

मेरा एक अनुरोध भी है। अभी तक कोई भी ऐसी सही व मूल्यवान पुस्तक उपलब्ध नहीं है, जो लोगों को मेरे बारे में अच्छी तरह से बता सके। मीडिया द्वारा मुझे पूरी तरह से उपेक्षित कर दिया गया है। इस देश में मेरी उपस्थिति मात्र स्कूली किताबों में है। प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों के पाठ्यक्रम में मेरे अन्य मित्रों जैसे पर्यावरण एवं मेरी संतानों के बारे में नही बताया जाता है। इसलिए सरकार द्वारा कुछ वस्तुओं की तरफ इच्छित ध्यान न दिये जाने तथा उदासीनता बरतने के कारण मैं दुखी एवं निराश हूं।

■

**प्रोफेसर एम महादेवप्पा**
निदेशक (ग्रामीण विभाग)
जे०एस०एस० महाविद्यालय
मैसूर– 570004

LEISA INDIA Kannada, No.4, Dec. 2015

# सामूहिक प्रयासों से लाभ अर्जित करना

**प्रदीप कुमार पाण्डा**

*अपने उपज और आमदनी में वृद्धि को देखते हुए उदयपुर की महिलाएं जैविक विधि से टमाटर की खेती करने लगी हैं। संगठन एवं सामूहिकता से लाभान्वित होती ये महिलाएं अब उत्पादन से लेकर बाजार तक की सभी गतिविधियों को संभालने में सक्षम हैं।*

पूरे विश्व में कृषि में महिलाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। आंकड़े बताते हैं कि पूरे विश्व में 500 मिलियन लघु सीमान्त खेतिहर परिवार हैं और 70 प्रतिशत कृषि कार्य महिलाओं द्वारा सम्पन्न किये जाते हैं। विश्व खाद्य एवं कृषि संगठन के अनुसार यह भी स्वीकार किया जाता है कि यदि उत्पादक संसाधनों के ऊपर महिलाओं की पहुंच पुरूषों के बराबर हो तो उत्पादकता में 30 प्रतिशत तक वृद्धि दर्ज की जा सकती है। एक तरफ पुरूष जहां आर्थिक लाभ केन्द्रित खेती करता है, वहीं महिलाओं की कोशिश यह होती है कि परिवार को विविधतापूर्ण पोषण एवं खाद्य उपलब्ध हो।

उद्योगिनी समूह अर्थात् ''उद्योग में महिला'' महिला उद्योग के क्षेत्र में वर्ष 1992 से काम कर रही है। उद्योगिनी से जुड़ाव के पश्चात् 25000 खेतिहर परिवारों के जीवन पर प्रभाव पड़ा है। ये परिवार विभिन्न प्रकार के मूल्य आधारित श्रृंखला जैसे– साल की पत्तियों, लाख, सिल्क, शहद, बांस, महुआ, तुलसी, टमाटर, सरसों, दलहन, कढ़ाई, अगरबत्ती, दुग्ध उद्योग, मसाले, बकरी पालन, आभूषण बनाना एवं मुर्गी पालन आदि उद्योगों से जुड़कर कठिन विपणन परिस्थितियों के बावजूद अपने जीवन में महत्वपूर्ण बदलाव लाये हैं। वर्तमान में, उद्योगिनी कम आय वाले चार राज्यों– झारखण्ड, मध्य प्रदेश, राजस्थान एवं उत्तराखण्ड में काम कर रही है।

### रूचिकर टमाटर की खेती

राजस्थान के उदयपुर जिले में स्थित सालुम्बर व सारदा विकास खण्डों के गांवों में लगभग 70 प्रतिशत किसान कुंए से सिंचाई कर टमाटर की खेती करते थे। इस क्षेत्र में पानी की बहुत कमी है और किसान वर्षा न होने के साथ – साथ बाजार के उतार–चढ़ाव के कारण बहुत कठिनाई झेलते हैं। इसके साथ ही किसानों द्वारा कृषि की दृष्टि से अनुचित कुछ गतिविधियों जैसे– पौधों के बीच में कम

प्रक्षेत्र पर सीखना

स्थान देना, रसायनों का उच्च उपयोग और जूट के बोरों में भण्डारण आदि अपनाने के कारण भी अधिक नुकसान होता था। इन परिस्थितियों के चलते, उद्योगिनी ने इन गांवों में हस्तक्षेप प्रारम्भ करने का निर्णय लिया और बेहतर उत्पादन पद्धतियों के साथ–साथ प्रभावी आपूर्ति श्रृंखला प्रबन्धन के ऊपर महिलाओं को प्रशिक्षण दिया गया। वर्ष 2009 में उद्योगिनी ने सालुम्बर और सारदा विकास खण्डों के गांवों में टमाटर की खेती में संलग्न महिलाओं की एक बैठक कराई और एक क्लस्टर का गठन किया, जिसे सामूहिक रूप से उदयपुर का टमाटर क्लस्टर के नाम से जानते हैं। ग्रामीण व्यापार हब परियोजना के तहत् संचालित यह पहल भारत सरकार के पंचायती राज मंत्रालय द्वारा अनुदानित है।

प्रारम्भ में, सबसे पहले महिलाओं को समूहों में संगठित किया गया। उनके टमाटर की खेती को उन्नत बनाने के लिए, उन्हें अच्छा नियोजन करने, भण्डारण तकनीक और बायो उर्वरकों के उपयोग तथा नीम आधारित पौध संरक्षण तकनीकों के ऊपर उन्हें प्रशिक्षित किया गया। किसानों को

2014 में गठित जयसमन्द कृषि उत्पादक कम्पनी के साथ 1436 उत्पादक जुड़े हैं। कम्पनी का प्रबन्धन 15 कार्यकारी सदस्यों द्वारा किया जाता है जो सभी महिलाएं हैं।

**टमाटरों की स्थाई खेती से श्रीमती फूलबाई में अब गांव में ही रहने का आत्मविश्वास आया है। जबकि उनके परिवार के लोग अन्य उद्यमों में लगे हुए हैं। राजस्थान के उदयपुर जिले के लिम्बावली गांव की रहने वाली फूलबाई के 4 बच्चे हैं और वह संयुक्त परिवार में रहती हैं। वह कम उत्पादन एवं अधिक नुकसान को सहते हुए पिछले 10 वर्षों से सब्ज़ी उत्पादन करती चली आ रही हैं। वे कीटों को नियंत्रित करने के लिए अधिक रसायनों का छिड़काव करती थीं। फूलबाई का कहना है – जब फलों के नुकसान का प्रति 20 प्रतिशत तक होने लगा तब उनके परिवार ने भैंस पालन करने की बात सोची।**

**लगभग 5 वर्ष पहले, फूलबाई ने उद्योगिनी द्वारा आयोजित सब्जी उत्पादन कार्यक्रम में भाग लिया। वर्ष 2009 में उन्होंने प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया और जैविक खेती अभ्यासों को अपनाया। उन्होंने कम्पोस्ट खाद तथा वर्मी कम्पोस्ट खाद बनाना प्रारम्भ किया, जिससे उनके फसलों को अधिक से अधिक जैविक खाद मिलने लगा। इस तरीके से उन्होंने रसायनिक उर्वरकों के उपयोग को घटाया। अपने खेतों में कीटों और बीमारियों के नियन्त्रण हेतु उन्होंने एक सप्ताह में तीन बार नीम आधारित कीटनाशकों का छिड़काव किया।**

**2 वर्ष बीतने के पश्चात्, टमाटर की उपज में 20 प्रतिशत तक वृद्धि हुई और उनकी आमदनी 40 प्रतिशत तक बढ़ी। अब उनके उत्पाद जय समन्द कृषि उत्पादक कम्पनी के माध्यम से बाजार में आने लगे। उनके पति ने सब्जी की खेती में उनका सहयोग करते हुए उनके कार्यबोझ को घटाया। उनकी छोटी लड़की निजी विद्यालय में पढ़ने जाने लगी। यह सभी कुछ उनकी आमदनी बढ़ने, परिवार का सहयोग मिलने तथा जय समन्द कृषि उत्पादक कम्पनी द्वारा प्राप्त सहयोग से ही संभव हो सका।**

पंक्ति से पौधरोपण के ऊपर प्रशिक्षित करते हुए बताया गया कि दो पंक्तियों के बीच 2.5 फीट से 3 फीट तथा एक पौध से दूसरे पौध के बीच कम से कम 1.5 फीट की दूरी रखनी चाहिए। उन्हें जूट की बोरी के बजाय क्रेटों का उपयोग करने पर भी प्रशिक्षित किया गया और उन्हें निःशुल्क क्रेट भी प्रदान किया गया।

महिलाओं को बढ़िया गुणवत्ता के बीजों के साथ–साथ जैव रसायन उपलब्ध कराये गये। प्रशिक्षित होने के बाद ये महिला किसान जैविक विधि से खेती करने की ओर प्रवृत्त हुए। जैविक उर्वरक एवं कीट नाशक प्रबन्धन का उपयोग करते हुए इन महिला किसानों की रसायनों पर निर्भरता कम हुई और वे अपनी आय को दुगुना करने में सक्षम हुईं। उत्पादों को क्रेट्स में भण्डारित करने के कारण फलों का नुकसान भी कम हुआ, जबकि पहले यह नुकसान 15 प्रतिशत से भी अधिक था। इससे उन्हें अपने उत्पादों का अच्छा दाम नहीं मिल पाता था। जब वे उत्पादित फलों को क्रेट में रखने लगीं तो उन्हें प्रति क्रिगा0 रू0 8.00 की दर से दाम मिलने लगा, जबकि पहले जब वे जूट के बोरे में रखकर बाजार ले जाती थीं तो प्रति किग्रा0 रू0 6.00 की दर से ही दाम मिलता था।

जैविक विधि से सब्ज़ियाँ उगाती फूलबाई

**वर्ष 2014 में गठित जय समन्द कृषि उत्पादक कम्पनी के साथ वर्तमान में 1436 उत्पादक जुड़े हुए हैं। कम्पनी में 15 कार्यकारी सदस्य हैं, जो सभी महिलाएं हैं।**

### एक उत्पादक कम्पनी का गठन

एक लाख रू0 की पूंजी के साथ किसानों के स्वामित्व एवं प्रबन्धन वाली जय समन्द कृषि उत्पादन कम्पनी को मार्च 2014 में स्थापित किया गया। जल्द ही, इससे 1436 उत्पादक जुड़ गये। कम्पनी का प्रबन्धन 15 बोर्ड सदस्यों द्वारा किया जाता है और ये सभी महिलाएं हैं। कम्पनी को तीन वर्षों तक प्रबन्धित करने व सुचारू रूप से चलाने के लिए रू0 8.4 लाख की वित्तीय सहायता नाबार्ड से प्रदान की गयी। एक बार जब कम्पनी का गठन हो गया, तब विभिन्न क्लस्टर गठित किये गये और बड़े पैमाने पर बाजारों में बिक्री के लिए विशिष्ट स्थानों से उत्पादों को उठाया जाने लगा।

महिलाएं प्रशिक्षण देने, उत्पादों का सही तौल करने, बीजों एवं उपकरणों की व्यवस्था करने सहित कम्पनी का प्रबन्धन कर रही थीं। बहुत कम मात्रा में ही सही, लेकिन कम्पनी कुछ महिला किसानों को सब्ज़ी उत्पादन के अतिरिक्त दलहन एवं अनाज के विपणन में भी सहयोग कर रही है।

भविष्य में, कम्पनी की योजना मूल्य संवर्धन करते हुए बड़े पैमाने पर सभी सब्ज़ियों के विपणन में सहयोग प्रदान करने की है। उदाहरण के लिए, केच–अप एवं जूस आदि बनाना। इसके अलावा यह भी महसूस किया जा रहा है कि दूसरे बाजारों में उत्पादों को बेचना बहुत आसान नहीं है और एक स्थान से दूसरे स्थान तक उत्पादों को ले जाने की लागत भी बहुत आती है। कम्पनी की भविष्य की योजना में प्रसंस्करण व्यापार को बढ़ाना भी शामिल है। यद्यपि कि अभी प्रारम्भ में यह प्रयास सफल नहीं रहा है।

## प्रभाव

महिलाओं के इस सघन पहल से समुदायों को कई फायदे हो रहे हैं। महिलाएं अब उत्पादन से लेकर विपणन प्रबन्धन तक की सभी गतिविधियों को स्वयं से संचालित करने में सक्षम हैं। इस प्रक्रिया के कारण, विशेषकर ''तकनीकी ज्ञान'' अर्जित करने के बाद महिलाओं की अपने परिवार एवं समुदाय में एक पहचान मिली है और उनकी आय में वृद्धि हुई है। कुछ पुरूष तो यह भी कहते हैं कि ''अब उनकी आमदनी के स्रोत बढ़े हैं, कृषिगत कार्यों में उनकी संलग्नता कम हुई है, जिस कारण वे अन्य कार्यों को करने में सक्षम हुए हैं।'' 5 – 13 फरवरी, 2015 तक आयोजित एक अध्ययन में, महिलाओं ने अपनी संवाद क्षमता को प्रदर्शित किया और बिना किसी बाहरी मदद के वे अपने विचारों को वे मजबूती से रखने में सक्षम हुईं। तथापि अभी भी जलवायु परिवर्तन के कारण उत्पन्न विषम परिस्थितियों में कीटों एवं बीमारियों के बढ़ते प्रकोप से पार पाना एक चुनौती बनी हुई है। महिलाएं इन चुनौतियों को स्वीकार कर रही हैं और इनका मजबूती से सामना करने हेतु तैयार हैं।

■

**प्रदीप कुमार पाण्डा**
मैनेजर– कार्यक्रम प्रबन्धन प्रणाली
उद्योगिनी
3–बी, द्वितीय तल, अर्जुनी नगर,
नई दिल्ली– 110029
वेब साईट : www.udyogini.org
ई–मेल : pradeep.udyogini@gmail.com

**Women forging change**
LEISA INDIA, Vol. 17, No.4, Dec. 2015

■

## Issues and Themes of LEISA INDIA Published in English 1999-2015

V.1, No. 1, 1999 - Markets for LEISA and Organic products
V.1, No. 2, 1999 - Stakeholders in Research
V.1, No. 3, 1999 - Restoring biodiversity

V.2, No. 1, 2000 - Desertification
V.2, No. 2, 2000 - Farmer innovations
V.2, No. 3, 2000 - Farming in the forest
V.2, No. 4, 2000 - Monocultures towards sustainability

V.3, No. 1, 2001 - Coping with disaster
V.3, No. 2, 2001 - Go global stay local
V.3, No. 3, 2001 - Lessons in scaling up
V.3, No. 4, 2001 - Biotechnology

V.4, No. 1, 2002 Managing Livestock
V.4, No. 2, 2002 - Rural Communication
V.4, No. 3, 2002 - Recreating living soil
V.4, No. 4, 2002 - Women in agriculture

V.5, No. 1, 2003 - Farmers Field School
V.5, No. 2, 2003 - Ways of water harvesting
V.5, No. 3, 2003 - Access to resources
V.5, No. 4, 2003 - Reversing Degradation

V.6, No. 1, 2004 - Valuing crop diversity
V.6, No. 2, 2004 - New generation of farmers
V.6, No. 3, 2004 - Post harvest Management
V.6, No. 4, 2004 - Farming with nature

V.7, No. 1, 2005 - On Farm Energy
V.7, No. 2, 2005 - More than Money
V.7, No. 3, 2005 - Contribution of Small Animals
V.7, No. 4, 2005 - Towards Policy Change

V.8, No. 1, 2006 - Documentation for Change
V.8, No. 2, 2006 - Changing Farming Practices
V.8, No. 3, 2006 - Knowledge Building Processes
V.8, No. 4, 2006 - Nurturing Ecological Processes

V.9, No. 1, 2007 - Farmers Coming together
V.9, No. 2, 2007 - Securing Seed Supply
V.9, No. 3, 2007 - Healthy Produce, People and Environment
V.9, No. 4, 2007 - Ecological Pest Management

V.10, No. 1, 2008 -Towards Fairer Trade
V.10. No. 2, 2008 - Living soils
V.10, No. 3, 2008 - Farming and Social Inclusion
V.10, No. 4, 2008 - Dealing with Climate Change

V.11, No. 1, 2009 - Farming Diversity
V.11, No. 2, 2009 - Farmers as Entrepreneurs
V.11, No. 3, 2009 - Women and Food Sovereignty
V.11, No. 4, 2009 - Scaling up and sustaining the gains

V.12, No.1, 2010 - Livestock for sustainable livelihoods
V.12, No.2, 2010 - Finance for farming
V.12, No.3, 2010 - Managing water for sustainable farming

V.13, No.1, 2011 - Youth in farming
V.13, No.2, 2011 - Trees and farming
V.13, No.3, 2011 - Regional Food System
V.13, No.4, 2011 - Securing Land Rights

V.14, No.1, 2012 - Insects as Allies
V.14, No.2, 2012 - Greening the Economy
V.14, No.3, 2012- Farmer Organisations
V.14, No.4, 2012- Combating Desertification

V.15, No.1, 2013- SRI: A scaling up success
V.15, No.2, 2013- Farmers and market
V.15, No.3, 2013- Education for change
V.15, No.4, 2013- Strengthening family farming

V.16, No. 1, 2014- Cultivating farm biodiversity
V.16, No. 2, 2014- Family farmers breaking out of poverty
V.16, No. 3, 2014- Family farmers and sustainable landscapes
V.16, No. 4, 2014- Family farming and nutrition

V.17, No. 1, 2015- Soils for life
V.17, No. 2, 2015- Rural-urban linkages
V.17, No. 3, 2015- Water-lifeline for livelihoods
V.17, No. 4, 2015- Women forging change

# स्थाई एवं अनुकूलित खेती

## महिलाओं के सामूहिक प्रयास

सामूहिक खेती में काम करती एक सदस्य

**शीलू फ्रांसिस एवं सारा कालमियस**

***महिला किसानों के पास हमेशा से ही खेती करने की सशक्त क्षमता है, लेकिन उन्हें हाशिये पर रखा जाता है। तमिलनाडु में महिला संगठनों ने अपने एक लाख सदस्यों के साथ मिलकर महिला किसानों द्वारा खेती में किये जाने वाले कार्यों को पहचान दिलाने, पारिस्थितिकी कृषि सम्बन्धित गतिविधियों को अपनाने तथा खेतों को नुकसानदायक रसायनों से सुरक्षित करने का सफल प्रयास किया है।***

हालांकि ग्रामीण क्षेत्रों की बहुत सी महिलाएं खेती का सारा काम करती हैं, लेकिन उन्हें किसान के तौर पर मान्यता नहीं प्राप्त है। तमिलनाडु में, महिलाओं का भूमि पर स्वामित्व पुरूषों के बराबर न होने के कारण कृषिगत निवेश एवं पूंजी तक उनकी पहुँच नहीं हो पाती, उनकी स्वतन्त्रता प्रभावित होती है और उनका सामाजिक स्तर दोयम दर्जे का होता है।

इन्हीं विपरीत परिस्थितियों में, वर्ष 1994 में दलित खेतिहर महिलाओं का महिला समूह बनाकर काम करना प्रारम्भ किया गया। हालांकि समूह की शुरूआत तो स्वास्थ्य के मुद्दे को लेकर की गयी, परन्तु जल्द ही समूह के उद्देश्यों में खाद्य सुरक्षा एवं पारिवारिक स्वास्थ्य के मुद्दों को प्रमुखता से शामिल कर लिया गया। समूह के लिए, पारिस्थितिकी कृषि का मतलब स्थानीय सन्दर्भ में उपयुक्त पारम्परिक स्थाई एवं अनुकूलित खेती गतिविधियां थीं।

महिला समूहों की सदस्यों को पौध संरक्षण एवं जैविक उर्वरकों को तैयार करने पर प्रशिक्षित किया गया। उन्होंने बाहरी निवेशों पर अपनी निर्भरता कम करने तथा कृषि में होने वाले खर्चों को घटाने के लिए स्थानीय तौर पर उपलब्ध संसाधनों जैसे गाय का गोबर, गाय का मूत्र, दूध आदि का उपयोग करना सीखा। यद्यपि कि इससे उनका काम कम नहीं हुआ, परन्तु पारिस्थितिकी कृषिगत गतिविधियों को अपनाने से निश्चित तौर पर खेती में लगने वाला खर्च कम हुआ, परिवार का स्वास्थ्य स्तर बढ़ा और पारिवारिक खाद्य सुरक्षा बढ़ी।

समूह के सदस्य एकल खेती के स्थान पर मिश्रित खेती अपनाने को उत्सुक हुए, जिससे जैव विविधता की प्राकृतिक पर्यावरणीय प्रणाली मजबूत हुई, जो मृदा और फसल दोनों के लिए बेहतर था। महिला किसानों ने मुख्य

कल्पनजा

रूप से परिवार की खाद्य सुरक्षा तथा छोटे स्तर पर उत्पादन के लिए पारिस्थितिकी कृषिगत अभ्यासों को अपनाया। उल्लेखनीय बात यह रही कि समूह की जिन महिलाओं के पास अपनी या लीज पर ली हुई जमीन नहीं थी, उन्होंने अपने घर के पास की जमीन पर जैविक गृह वाटिका तैयार किया। तमिलनाडु के अधिकांश जिलों में जल संकट के कारण धान उगाना बहुत मुश्किल है इसलिए किसानों ने स्थानीय परिस्थितियों तथा संस्कृति से मेल खाते पोषण से भरपूर मोटे अनाजों को उगाना प्रारम्भ कर दिया। नेटवर्क ने भूमि पर स्वामित्व एवं औपचारिक ऋण के अभाव से जुड़े मुद्दों पर काम किया। औपचारिक बैंकिंग प्रणाली तक पहुंच बहुत मुश्किल से हो रही थी। ऐसे में संगमों से जुड़े प्रत्येक सदस्य ने 100 रू0 प्रति माह बचाना प्रारम्भ किया, जो उनके बीजों, स्वास्थ्य एवं शिक्षा से जुड़े खर्चों को पूरा करने के काम आने

**कल्पनजा नागरकोल गांव में रहने वाली गृहणी हैं। हमेशा बीमार रहने वाली कल्पनजा काम करने जाने में समर्थ नहीं थीं। स्वस्थ भोजन के ऊपर आयोजित कार्यशाला में सहभागिता करने के बाद, वह अपनी स्वयं की गृहवाटिका तैयार करने हेतु उत्साहित हुईं और छह माह बाद उन्होंने अपनी गृहवाटिका में जैविक विधि से सब्ज़ियां उगाना प्रारम्भ कर दिया। गृहवाटिका में उन्होंने रसोई से निकले अपशिष्टों तथा गाय के गोबर का उपयोग प्राकृतिक उर्वरक के तौर पर किया। उनका कहना है कि गृहवाटिका से हमारा काम नहीं बढ़ा, परन्तु हम व हमारे परिवार को बहुत सी सब्ज़ियां मुफ्त में मिल जा रही हैं। कल्पनजा के बच्चे भी अपनी गृहवाटिका के देख–रेख हेतु उत्साहित हुए हैं। अब उनके बच्चे अपने घर या स्कूल के रास्ते पर नये पौधों को देखते रहते हैं ताकि उसे अपनी गृहवाटिका में लगा सकें। उनसे उत्साहित होकर बहुत सी महिलाएं महिला समूह के सहयोग से बीज पा रही हैं।**

महिला समूहो के एक लाख सदस्यों में से मात्र 1 प्रतिशत महिलाओं के पास स्वयं की जमीन है।

### सामूहिक खेती

**इस सामूहिक खेत पर आने वाले खर्चों को समूह की सभी 6 सदस्यों ने आपस में बांट लिया और यह विचार किया गया कि सभी फसलों से प्राप्त होने वाली उपज को भी आपस में बराबर बांट लिया जायेगा तथा अपने व परिवार के उपयोग से बचे शेष अनाज को महिला समूह के सदस्यों को बेच दिया जायेगा। जमीला ने एक समझौता प्रपत्र पर हस्ताक्ष कर दिया, जिसके मुताबिक अन्य दूसरी सदस्य उसके खेत को अगले पांच वर्षों तक के लिए सामूहिक खेती के रूप में प्रयोग करेंगी। केला, टापिकोआ के पौधों तथा सब्जियों की खेती करने का विचार बना। महिला समूह ने प्रारम्भिक निवेश के तौर पर सामूहिक खेती करने वाली महिला समूहों को प्रारम्भिक निवेश के रूप में रू0 4000.00 उपलब्ध कराया। फिलोमिना और सदस्य यह विश्वास करते हैं कि सामूहिक खेती प्रारम्भ करने की उनकी यह पहल भविष्य में अन्य सदस्यों को ऐसा ही करने के लिए उत्साहित करेगी।**

लगा। तमिलनाडु राज्य के केस में, जमीन पर महिलाओं का स्वामित्व बहुत कम एवं विकट परिस्थितियों में ही था। इस मजबूत समूह के एक लाख सदस्यों में मात्र 1 प्रतिशत महिलाओं के पास ही अपनी स्वयं की जमीन थी।

एक नेटवर्क के तौर पर, उनमें एक दूसरे के साथ मिलकर काम करने से मजबूती बनी और वे अपनी बातों को कहने के लिए उत्साहित हुईं, उनके बीच से नेतृत्व उभर कर आया। इस सामाजिक नेटवर्क के तहत् सामूहिक खेती करने तथा संगम नाम से बने समूहों के माध्यम से महिलाओं ने अपनी उपज एवं वित्तीय / सामाजिक सहयोग प्रणाली को उन्नत करते हुए सुनिश्चित गरीबी के जोखिम को कम किया, जिससे इन महिलाओं को एक निश्चित स्तर तक अपनी खाद्य सुरक्षा बनाये रखने में मदद मिली। ये महिलाएं कृषि पारिस्थितिकी स्थाई खेती परम्परा को कायम रखते हुए एक माडल का काम कर रही हैं, जिसे देखकर अन्य युवा महिलाएं खेती करने हेतु उत्सुक हो रही हैं।

■

**शीलू फ्रांसिस**
महिला समूह की नेता, महिला समूह
नं० 10, पूर्वी गली, कोलात्तूर
मद्रास– 600009, तमिलनाडु
ई–मेल : womenscollective1@gmail.com

**श्सारा कालमियस**
इन्टर्न, महिला समूह
ई–मेल : saracalmius@gmail.com

**Women forging change**
LEISA INDIA, Vol. 17, No.4, Dec. 2015

# जानकारी से मिला नव पहल का रास्ता

**अर्चना श्रीवास्तव**

*महिला किसानों को सशक्त बनाने के लिए यह जरूरी है कि उन्हें ज्ञान व जानकारियों से समृद्ध किया जाये। जानकारी के आधार पर ही वे अपने खेत, मृदा एवं जल साथ परिवार की समृद्धि को भी बढ़ाती हैं। उत्तर प्रदेश की महिला किसानों के साथ के अनुभव कुछ ऐसा ही दर्शाते हैं।*

पूर्वी उत्तर प्रदेश के जल समृद्ध क्षेत्रों में लोग मौसम के हिसाब से खेती करते थे और बाढ़ग्रस्त क्षेत्र, छोटी जोत तथा कृषि की और भी बहुत सी परेशानियां होने के बावजूद खुशहाली थी, परन्तु पिछले दो दशकों में लगातार बढ़ती मौसमी चुनौतियों ने विशेषकर इन छोटी जोत के खेतिहर परिवारों को भूखमरी के कगार पर ला दिया। किसान अगली फसल के भरोसे कर्ज ले लेते हैं और अचानक हुई तेज बारिश या सूखे के लम्बे दौर से उनकी आस टूट जाती है, कर्ज का बोझ बढ़ जाता है और परिवार के सामने खाने का संकट भी उत्पन्न हो जाता है। बात सिर्फ यहीं नहीं रूकती, वरन् बारिश की अनिश्चितता के कारण जानवरों के लिए चारा और जलौनी की भी समस्या उत्पन्न होती है। इन कठिन परिस्थितियों से जूझ रही महिला किसानों के सामने खेती की बढ़ती लागत तथा लगातार कम होते उत्पादन की भी बहुत बड़ी समस्या है और बड़ी संख्या में छोटे मझोले किसान खेती छोड़कर मजूदर बनने पर मजबूर हैं।

इन्हीं किसानों में से एक श्रीमती प्रेमा देवी हैं। जनपद सन्त कबीर नगर, मेहदावल विकासखण्ड के बनकटा गांव की रहने वाली प्रेमा देवी खेती करने में सक्षम नहीं हो पा रही थीं और उन्होंने अपनी खेती अधिया पर दे दी थी। वर्ष 2012 में गोरखपुर एन्वायरन्मेण्टल एक्शन ग्रुप ने मेहदावल विकास खण्ड के 20 गांवों में पैक्स परियोजना का संचालन प्रारम्भ किया, जिसमें प्रेमा देवी का गांव भी शामिल था। संस्था ने महिला किसानों का समूह गठित कर किसान विद्यालयों के माध्यम से उन्हें खेती की नवीन तकनीकों व विधाओं से परिचित कराने का कार्य करने लगी। कृषि वैज्ञानिकों, कृषि विभाग, के0वी0के0, अनुभवी किसानों आदि की पहुंच इनके गांव तक होने से महिला किसानों का सीधा संवाद होने लगा। नई–नई जानकारियों पाकर प्रेमा देवी ने स्वयं खेती करना प्रारम्भ कर दी। जैविक उर्वरकों का उपयोग कर खेती की लागत कम की तो घर पर ही बीज तैयार कर बाजार पर निर्भरता भी घटाई।

ढैंचा व धान की मिश्रित खेती के साथ प्रेमा देवी

वर्ष 2013 में इन्होंने महिला किसानों हेतु आयोजित एक प्रशिक्षण में भाग लिया, जिसमें हरित खाद के रूप में ढैंचा की खेती के बारे में जानकारी मिली। सरकारी कृषि बीज भण्डार से अनुदान पर बीज प्राप्त कर इन्होंने अपने 5 बीघा खेत में हरित खाद के लिए ढैंचा की बुवाई की और एक बीघा खेत में बीज के लिए ढैंचा लगाया। एक बीघा खेत में ढैंचा की खेती में श्रम सहित इनकी कुल लागत रू0 1471.00 के सापेक्ष 3.5 कुन्तल बीज तथा 20 कुन्तल लकड़ी की प्राप्ति हुई। इनकी सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि जिस सरकारी कृषि बीज भण्डार से इन्होंने रू0 4.20 पर बीज खरीदा था, उसी बीज भण्डार को इन्होंने रू0 40.00 की दर से 3 कुन्तल बीज बेचा। इसके अलावा आस–पास के गांव के किसानों ने भी इनसे बीज खरीदा। ढैंचा से होने वाले फायदों को देखते हुए इनका कहना है कि ''हरित खाद के रूप में ढैंचा की बुवाई करने से हमारे खेत को जैविक खाद मिली और धान की उपज में लगभग 15 प्रतिशत की वृद्धि हुई। साथ ही अब मुझे जलौनी की दिक्कत नहीं होती है, मेरे जानवरों के लिए चारा मिल जा रहा है और ढैंचा खेत के चारों तरफ बाड़ का भी काम कर रही है, जिससे पशुओं से फसल का बचाव होता है। सिर्फ यही नहीं, ढैंचा की लकड़ी इतनी मजबूत होती है कि हम उसका इस्तेमाल छप्पर बनाने में भी कर सकते हैं।''

आज प्रेमा देवी ढैंचा की खेती के लिए न सिर्फ अपने गांव में वरन् आस–पास के अन्य गांवों में रोल मॉडल बनी हुई हैं और ढैंचा बीज केन्द्र के रूप में इनके घर की पहचान है।

■

**अर्चना श्रीवास्तव**
एडवोकेसी समन्वयक
पैक्स परियोजना
गोरखपुर एनवायरन्मेन्टल एक्शन ग्रुप, गोरखपुर